INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

"तर्कसंग्रह के परिप्रेक्ष्य में पाकज-क्रिया का दार्शनिक विवेचन"

डॉ० हरेती लाल मीना[1]

सारांश- किसी तत्त्व में विजातीय अग्नि संयोग को पाकज उत्पत्ति सिद्धान्त कहा जाता है। यहाँ विजातीय का अर्थ है असमान अथवा भिन्न। अर्थात् अग्नि से भिन्न द्रव्य में यदि अग्नि का संयोग होता है, तो उस क्रिया को पाकज क्रिया कहते हैं। सामान्य शब्दों में पाक क्रिया का अर्थ भी पकाने की क्रिया से लिया जाता है। खाद्य पदार्थ को पकाना हो, किसी कच्चे फल को पकाना हो अथवा घड़े को पकाना हो इन सभी प्रकार के पाक में किसी न किसी रूप में अग्नि संयोग अवश्य होता है। पाक का अर्थ है पकाना, अतः पाकज का अर्थ हुआ पकाने से उत्पन्न।

इन दोनों सिद्धान्तों में मुख्य अन्तर यही है कि पीलुपाक को मानने वाले वैशेषिक आचार्य घटादि के परमाणुओं के बीच उष्णता के प्रवेश से उनके संयोग के नष्ट होने के कारण प्रथम कार्यद्रव्य घटयदि का नाश मानकर नूतन लाल घट की उत्पत्ति मानते हैं। जबकि नैयायिक अग्नि में सम्पूर्ण घट के प्रवेश से उसके आरंभिक परमाणुओं के संयोग के नाश से घटनाश एवं उसके पश्चात् नये घड़े की उत्पत्ति को स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के अनन्तर में हम पहले वाले घड़े को ही देखते हैं। यहाँ अन्तर केवल उसमें रंग में परिवर्तन का ही है। यदि पहले घड़े के नष्ट होने पर उसके स्थान पर सर्वथा नूतन घड़ा उत्पन्न होता तो उसे हम अपने पुराने घड़े के रूप में भला कैसे पहचान सकते हैं? अतः पिठर पाक वाला सिद्धान्त ही उचित एवं व्यावहारिक प्रतीत होता है।

बीज शब्द- पदार्थ, परमाणु, पाकज, अपाकज, पृथिवी, पीलुपाक, पीठरपाक, नित्य एवं अनित्य ।

विषय प्रवेश –

भारत भूमि ही पृथ्वी का वह क्षेत्र है जिसने सर्वप्रथम 'आणविक सिद्धांत' को प्रकट किया। इसके जनक आदिकाल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ऋर्षि कणाद थे। ईसा से पूर्व छठीं शताब्दी में इस भारतीय आचार्य ने यह कल्पना की थी कि पदार्थ सूक्ष्म कणों से मिलकर निर्मित होते हैं जो और अधिक विभाजित नहीं हो सकते उन्हें 'परमाणु' अर्थात 'सूक्ष्म अणु' कहा गया।

परमाणु में चारों भूतों के अपने-अपने गुण विद्यमान होते हैं। वैशेषिक सूत्र के अनुसार कारण में जो गुण होता है, वही कार्य में भी पाया जाता है- **कारणभावात् कार्य भावः। - (वैशेषिक 4/3)**

परमाणुओं का संयोग एक विशेष प्रक्रिया से होता है। सर्वप्रथम दो परमाणुओं के संयोग से एक द्वयणुक का निर्माण होता है। इसके पश्चात तीन द्वयणुक मिलकर एक त्र्यणुक का निर्माण करते हैं, इसे त्रसरेणुक भी कहते हैं। चार

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

त्र्यणुक के संयोग से एक चतुरणुक का प्रादुर्भाव होता है। जब चतुरणुक भिन्न भिन्न संख्याओं में संयुक्त होते हैं तब द्रव्य का विकास होता है। स्थूल पृथ्वी, स्थूल अग्नि आदि सभी इसी विशेष प्रक्रिया से परमाणुओं का संयोग होकर बनते हैं। इस प्रकार वैशेषिक दर्शन में पदार्थोत्पत्ति में परमाणु ही उपादान कारण होते हैं।

पदार्थोत्पत्ति के उपादान कारण में हमने समझा कि परमाणु एक विशेष प्रक्रिया से संयुक्त होकर द्रव्य की उत्पत्ति एवं विकास में सहायक होते हैं। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या परमाणु स्वयं संयुक्त होने का कार्य संपादित कर लेते हैं ? क्या परमाणुओं में स्वयं गति प्राप्त करने की शक्ति है ? अथवा उन्हें कोई और गतिशील बनाता है ? इस प्रश्न का उत्तर घड़े के निर्माण की प्रक्रिया से समझ सकते हैं। घड़े के निर्माण में जो उपादान कारण मिट्टी है, वह अचेतन है। वह स्वयं गतिशील होकर घड़े में परिवर्तित नहीं हो सकती। कोई न कोई चेतन कुम्हार उसे आकृति प्रदान करता है, उसका निर्माण करता है। ठीक उसी प्रकार पदार्थोत्पत्ति में भी परमाणु स्वयं गतिशील नहीं होते, अपितु उनको गति देने वाला कोई बाहा कारण अवश्य होता है। अब इस बाह्य कारण की यदि वैशेषिक दर्शन में खोज की जाए तो स्पष्ट होता है कि ईश्वर पदार्थोत्पत्ति में निमित्त कारण हैं। ईश्वर को जगत् का निमित्त कारण मानने के पीछे तर्क यह है कि वह जीवों को उनके अदृष्ट (कर्म संचय) के अनुसार कर्मफल का भोग कराने के लिए परमाणुओं में क्रिया या गति प्रवर्तित करता है।

पकाने की क्रिया या विजातीय अग्नि संयोग की क्रिया एक सामान्य प्रक्रिया होती है, किन्तु इस प्रक्रिया में भी एक क्रमबद्ध एवं सुसंगठित सिद्धान्त न्याय एवं वैशेषिक दर्शन के आचार्यों द्वारा दिया गया है, वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है- 1. पीलुपाकवाद 2. पिठरपाकवाद

पाक-क्रिया –

रूप, रस, गन्ध एवं स्पर्श ये चारों गुण नित्य एवं अनित्य दोनों प्रकार के होते हैं। कभी तो ये अग्निसंयोग से जन्य (अतः अनित्य) होते हैं और कभी स्वाभाविक (अतः नित्य) होते हैं। जैसा कि पृथिवी में ये गुण पाकज (अग्निसंयोग से उत्पन्न होने वाले) कहे गये हैं, जबकि अन्य तीनों अवयविद्रव्यों, जल, तेज, एवं वायु में वे अपाकज, किन्तु नित्य व अनित्य दोनों प्रकार के माने गये हैं; इन द्रव्यों के नित्य परमाणुओं में तो ये गुण नित्य माने गये हैं, किन्तु उनसे उत्पन्न होनेवाले कार्यद्रव्यों में अनित्य। **रूपादिचतुष्टयं पृथिव्यां पाकजमनित्यञ्च। अन्यत्राऽपाकजं नित्यमनित्यञ्च। नित्यगतं नित्यम्, अनित्यगतमनित्यम्**[1] वस्तुतः यह समस्या मूलरूपेण कारणता-नियम से सम्बद्ध है और वहां भी विशेषतः गुणों के सन्दर्भ में। प्रश्न यह है कि क्या अवयवीद्रव्य के (धर्म) गुण उसके अवयवों के (धर्मों) गुणों से जन्य हैं (और इस प्रकार अवयवश्रृंखला में अन्तिम आरम्भक परमाणुओं से) अथवा स्वतन्त्र रूप से जन्य हैं ? वैशेषिक दर्शन का निश्चित उत्तर है कार्य के गुण सदा कारण के गुणों से उत्पन्न होते हैं- **कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः।**[2] इस मूल मान्यता तक तो न्याय एवं वैशेषिक दोनों परम्पराओं में पूर्ण सहमति है, किन्तु पार्थिव कार्यों में उत्पन्न

होनेवाले गुणों के पाक (अग्निसंयोगजन्य परिवर्तन) के सम्बन्ध में इन दोनों सम्प्रदायों में घोर विप्रतिपत्ति है, जिसका विवेचन यहां सर्वथा प्रासंगिक है।

पाक का लक्षण -

अन्नम्भट्ट ने **'पाकस्तेजः संयोगः**[3] तेजः संयोगमात्र' को पाक कहा है, यहाँ 'पाक' शब्द को समझना होगा, क्योंकि आचार्य अन्नंभट्ट ने रूप, रस, गन्ध और स्पर्श के सर्वप्रथम दो भेदों पाकज और अपाकज का ही उल्लेख किया है। 'पाक' का सामान्य अर्थ 'पकाना' है और यह क्रिया तेज के संयोग से होती है। इसीलिए तर्कसंग्रहकार ने तेज के संयोगमात्र को 'पाक कहा है। इसे हम उदाहरण द्वारा इसप्रकार समझ सकते हैं**- तत्र पाकेनाग्निसंयोगेनावयविष्वपि रूपादिकं जन्यत इति नैयायिकाः ।... आपाकनिक्षिप्तानां घटादीनां पूर्वरूपादिविजातीयरूपाद्यनुभूयते ।**[4] अर्थात 'पाक' की इस प्रक्रिया को समझाने के लिए प्रायः यह दृष्टान्त दिया जाता है- 'कुम्हार द्वारा बनाया गया मिट्टी का एक कच्चा घड़ा आवे में पकाये जाने से पूर्व श्यामवर्ण (काले रंग का) होता है, किन्तु भट्टी में पक जाने के पश्चात् (अग्नि-संयोग के अनन्तर) वह अन्दर एवं बाहर दोनों तरफ से पूरी तरह से लाल हो जाता है। घट के रूप-परिवर्तन की यही प्रक्रिया न्याय-वैशेषिक परम्परा में 'पाक' कही गई है।

किन्तु न्यायबोधिनीकार ने उसे परिष्कृत करके **' पाको नाम विजातीयतेजः संयोगः'**[5] को 'पाक' कहा है पाकजविषयक विवेचन इस का अर्थ है विलक्षण तेजः संयोग और वह (पाक) अनेक प्रकार का है। रूप का उत्पादक विलक्षण (तेजः) संयोग है। उसकी अपेक्षा रस का उत्पादक (तेजः संयोग) विलक्षण है। इस प्रकार स्पर्शादि में भी। इसी प्रकार कार्यविलक्षणता के कारण अनेक प्रकार के पाक मानने चाहिएँ। जैसे- **तृणपुञ्जनिक्षिप्त आम्रादौ उष्मलक्षणविजातीय तेजः संयोगात्पूर्वहरितरूप- नाशे रूपान्तरस्य पीतादेरुत्पत्तिः पूर्वरसस्याम्लस्यैवानुभवात् । क्वचित्पूर्व- हरितरूपसत्त्वेऽपि रसपरावृत्तिर्दृश्यते । विजातीयतेजः संयोगरूपपाक- वशात्पूर्वतनाम्लरसनाशे मधुररसस्यानुभवात् । तस्माद्रूपजनकापेक्षया रस- जनको विलक्षणः**[6] अर्थात तृण के ढेर में रखे गए आम आदि में ऊष्मरूप विलक्षण तेजः संयोग के कारण पूर्व हरित रूप (हरा रंग) का नाश होने से (हरित से) अन्य रूप पीत आदि की उत्पत्ति होती है (और) पूर्व अम्ल रस का ही ज्ञान होता है। कहीं पूर्व हरित (हरा) रूप होने पर भी (आम के) रस में परिवर्तन देखा जाता है क्योंकि विलक्षण तेजः संयोगरूप पाक के कारण पूर्व अम्ल रस का नाश होने पर (आम में) मधुर रस का अनुभव होता हैं। इसलिए रूप के उत्पादक (तेजः संयोग) की अपेक्षा रस का उत्पादक (तेजः संयोग) विलक्षण है। इस प्रकार गन्ध के जनक (तेजः संयोग को) विलक्षण ही स्वीकार करना चाहिए क्योंकि रूप तथा रस में परिवर्तन न होने पर भी पूर्व गन्ध का नाश होने पर विलक्षण तेजः संयोग से सुरभि गन्ध का ज्ञान होता है। इसी प्रकार स्पर्श के उत्पादक पाक से भी कठिन स्पर्श का नाश होने पर मृदु स्पर्श का अनुभव होता है। इसलिए रूप आदि को उत्पन्न करने वाले (तेजः संयोग) विलक्षण ही हैं, (रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श में परिवर्तनरूप) कार्य के अनुसार समझ लेना चाहिए।

अतः पृथिवी के परमाणुओं के एक जातिवाला होने पर भी पाक की महिमा से अन्य विलक्षण द्रव्य का ज्ञान होता है। **यथा गोभुक्ततृणादीनामापरमाण्वन्तं भने तृणारम्भकपरमाणुषु विजातीय- तेजः संयोगात्पूर्वरूपादिचतुष्टयनाशे तदनन्तरं दुग्धे यादृशं रूपादिकं वर्तते तादृशरूपरसगन्धस्पर्शजनकास्तेजः संयोगाः जायन्ते।**[7] अर्थात गो द्वारा खाए गए (चर्वित) तृणादि का परमाणुपर्यन्त नाश होने पर तृण के आरम्भक परमाणुओं में विलक्षण तेजः संयोग के कारण पूर्व रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श- इन चारों का नाश होने पर उसके बाद दूध में जैसे रूपादि होते हैं वैसे रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श के उत्पादक तेजः संयोग उत्पन्न हो जाते हैं। तदनन्तर वैसे रूप, रस, आदि उत्पन्न हो जाते हैं। वैसे रूपादि से विशिष्ट परमाणुओं से दूध का द्वयणुक उत्पन्न होता है (बनना आरम्भ होता है)। उसके बाद त्र्यणुक आदि के क्रम से महादुग्ध उत्पन्न होता है (का आरम्भ होता है)। इस प्रकार महादुग्ध को उत्पन्न करने वाले परमाणुओं से ही दधि (बनता है) उत्पन्न होता है। इस प्रकार पाक की महिमा से ही दधि को उत्पन्न करने वाले परमाणुओं से नवनीत (मक्खन) उत्पन्न होता है।

1. पीलुपाकवाद - यह वैशेषिक दार्शनिकों का मत है। इसके अनुसार पाक 'पीलुओं' अर्थात् 'परमाणुओं' में होता है, अवयवी में नहीं, क्योंकि अवयवी में पाक होने का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं होता। **पीलुपाकवादो वैशेषिकाणाम् । पाकः परमाणुष्वेव जायते, नावयविनि, मानाभावात्'।**[8] जब कुम्भकार अपक्क (कच्चे) घट को आँवे में रखता है तब मन्द-मन्द आँच के प्रभाव से पार्थिव परमाणुओं में क्रिया होती है। इस क्रिया से द्व्यणुक में विभाग उत्पन्न होता है और द्वयणुक का नाश हो जाता है। द्व्यणुक के नाश से त्र्यणुक का नाश होता है जो तीन द्वयणुकों से मिलकर बना है। त्र्यणुक के नाश से चतुरणुक का नाश- इसी क्रम से अपक्क घटरूप कार्य का नाश हो जाता है। घट के पार्थिव परमाणुओं में रहने वाले श्यामरूप को नष्ट करके पाक रक्तरूप की उत्पत्ति करता है। परिवर्तित रूप वाले इन पार्थिव परमाणुओं में रक्त घट के लिए एक नूतन कारण श्रृंखला आरम्भ होती है। पाक से परमाणुगत श्याम- रूप रक्तरूप में परिवर्तित हो जाता है। इस रूपान्तरोत्पत्ति के समवायिकारण परमाणु हैं तथा परमाणुओं में समवाय सम्बन्ध से रहने वाला पाक (तेजस्संयोग) असमवायिकारण है। अदृष्टयदि निमित्त कारण हैं- **तत्र परमाणवः समवायिकारणम्। तेजः संयोगोऽसमवायिकारणम्। अदृष्टादिकं निमित्तकारणम्। द्वयणुकादिरूपे कारणरूपमसमवायिकारणम् इति पीलुपाक- वादिनो वैशेषिकाः।**[9]

द्वयणुक का रक्तरूप त्र्यणुकगत रक्तरूप का असमवायिकारण है। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि त्र्यणुक से उत्पन्न होने वाले रक्तरूप का असमवायिकारण पाक नहीं है जैसे वह (पाक) परमाणुद्वय के रक्तरूप की उत्पत्ति में था। द्वयणुक के रक्तरूप की उत्पत्ति में समवायिकारण स्वयं द्वयणुक है और निमित्त कारण पूर्ववत् अदृष्टादि हैं।

2. पिठरपाकवाद- नैयायिक भी रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श को पाकज मानते हैं। नैयायिकों के अनुसार पूर्व घट का नाश हुए बिना पाक से न केवल अपक्क घट के पार्थिव परमाणुपर्यन्त अवयव प्रभावित होते हैं बल्कि पूरा अपक्क श्याम घट भी प्रभावित होता है। यह रूप परिवर्तन केवल पार्थिव परमाणुओं में ही नहीं होता प्रत्युत सम्पूर्ण घट में भी होता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि बिना श्याम घट के नष्ट हुए पाक (तेजस्संयोग) से अवयवी घट के परमाणुपर्यन्त अवयवों में श्यामरूप के स्थान पर एक साथ रक्तरूप की उत्पत्ति हो जाती है- **पूर्वघटस्य नाशं विनैवावयविन्यवयवेषु परमाणुपर्यन्तेषु च युगपद्रूपान्तरोत्पत्तिरिति पिठरपाकवादिनो नैयायिकाः।**[10]

यह केवल रूप ही नहीं है जिसमें पाक से ऐसा परिवर्तन होता है। तृण के ढेर में रखे हुए आम में मसाले की गर्मी से खट्टे रस का नाश होकर मधुर रस उत्पन्न हो जाता है। पेड़ पर लटके हुए हरे आम में भी कुछ समय पश्चात् हरितरूप पीतरूप में, खट्ट्टी गन्ध मीठी गन्ध में, खटास (अम्ल रस) मधुर रस में तथा कठिन स्पर्श मृदु स्पर्श में परिवर्तित हो जाते हैं। इस परिवर्तन में भी सूर्य की उष्णता अर्थात् तेजस्संयोग को ही कारण मानना चाहिए।

परमाणुओं तक तेज का संयोग पहुँच जाए- इस तथ्य को ध्यान में रखकर पीलुपाकवाद में घट के नाश होने तथा उसकी पुनः उत्पत्ति की जटिल प्रक्रिया अपनाई गई है। नैयायिक पीलुपाकवाद को स्वीकार नहीं करते। इस विषय में वे कहते हैं कि घट का नाश होने के पश्चात् पुनः नूतन घट की उत्पत्ति से हमें पहचान नहीं होनी चाहिए कि यह वही घट है। परन्तु घट की पहचान तो उसी रूप में होती है। आँवे में रखने से पहले कच्चे घड़े में जैसी रेखाएँ हम खींच देते हैं या जैसी उसकी आकृति होती है वैसे ही आँवे से निकलने के बाद भी रहती हैं। इसलिए नैयायिक सरल तथा युक्तिपूर्ण प्रक्रिया अपनाते हैं और कहते हैं कि पूरे घट का नाश हुए बिना पाक से सम्पूर्ण घट में रूपान्तरोत्पत्ति हो जाती है। परमाणुओं तक आग कैसे पहुँचेगी, इस आपत्ति का उत्तर वे यह कह कर देते हैं कि आग के ऊपर रखे बर्तन में अग्नि के वास्तविक संयोग के बिना भी पानी तो उबलता ही है। ठीक उसी प्रकार परमाणुओं तक अग्नि का प्रभाव पहुँच जाता है और रूपादि गुणों में परिवर्तन कर देता है। इसमें अनुपपत्ति का कोई प्रसंग ही उपस्थित नहीं होता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पीलुपाक एवं पिठरपाक सम्बन्धी यह विवाद वैशेषिकों एवं नैयायिकों द्वारा सम्पूर्ण तार्किक सूक्ष्मता के साथ आगे बढ़ाया गया है, किन्तु दोनों ही अपने-अपने स्थान पर एकांगी हैं। वस्तुतः पीलुपाक ही नैयायिकों एवं वैशेषिकों के मध्य उनकी वास्तविक निष्ठा का परिचायक सिद्धान्त बन गया है। अतः सारांश रूप में न्यायकन्दलीकार के शब्दों में, सिद्धान्तपक्ष की ओर से यही कहा जा सकता है कि हमने 'यथोपदेश' एवं 'यथाप्रज्ञ' व्याख्या की है, शेष में विद्वान् ही प्रमाण हैं।

सन्दर्भ संकेत-

[1] तर्कसंग्रह पृष्ठ संख्या-150

[2] वैशेषिकसूत्र- 2/1/24

[3] तर्कसंग्रह दीपिकाव्याख्या,काशीराम एवं संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 75

[4] कणादरहस्य, पृष्ठ संख्या 59

[5] तर्कसंग्रह न्यायबोधिनीव्याख्या, संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 53

[6] तर्कसंग्रह न्यायबोधिनीव्याख्या, संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 54

[7] तर्कसंग्रह न्यायबोधिनीव्याख्या, संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 54

[8] पदार्थीयदिव्यचक्षुः, पृष्ठ संख्या 35

[9] तर्कसंग्रह दीपिकाव्याख्या,काशीराम एवं संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 76

[10] तर्कसंग्रह दीपिकाव्याख्या,काशीराम एवं संध्या राठौर, पृष्ठ संख्या 76

संदर्भग्रथ-सूची

- तर्कसंग्रह (अन्नंभट्ट), दीपिकाव्याख्या, कांशी राम और संध्या राठौर, मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली, 2007
- तर्कसंग्रह (अन्नंभट्ट), न्यायबोधिनीव्याख्या, संध्या राठौर, मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली, 2018
- तर्कसंग्रह (अन्नंभट्ट), चन्द्रिकाव्याख्या, राकेश शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2011
- न्यायसिद्धांतमुक्तावली (श्री विश्वनाथपंचानम), बालप्रिया व्याख्या, गजाननशास्त्री मुसलगांवकर, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2003
- शशिप्रभा कुमार, वैशेषिक दर्शन में पदार्थ-निरूपण, प्रकाशन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1962
- शास्त्री, धर्मेन्द्र नाथ, भारतीय दर्शनशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM